REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2021

"हिंदी वेब साहित्य : स्थिती एवं गति"

डॉ. फैमिदा शब्बीर बिजापूरे
कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपूर, जि. सोलापूर.

कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी शब्द 'कम्प्यूटर' से हुई है जिसका अर्थ होता है 'गणना'। किन्तु कम्प्यूटर का कार्य केवल गणना करना नही अपितु सूचनाओं और निर्देशों के आधार पर मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में सहायता प्रदान करता है। इस आधार पर हम इसे इन्फॉर्मेशन अथवा सूचना के माध्यम से संगणना (प्रोसेसिंग) करने वाला उपकरण कह सकते हैं। इसीलिए इसका नामकरण हिन्दी में संगणक हुआ है।

इन्टरनेट (अन्तरताना) का इतिहास एवं भारत में इन्टरनेट का विकास :

इन्टरनेट (अन्तरताना) के जन्म का कारण अत्यन्त रोचक है। 19 वी शती के छठे दशक के उत्तरार्द्ध में जब यूनियन ऑफ सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक और यू.एस.ए. में शीत युद्ध मचा था उस समय अमेरिका सूचना का यह माध्यम तलाश रहा था जो स्थूल रूप से नष्ट न किया जा सके। जो USSR द्वारा हमला किए जाने पर भी Bomb Proof हो और उसकी Army, Airforce एवं Navy के मध्य तालमे बना रहे। यह माध्यम Electronic text आधारित इन्टरनेट (अन्तरताना) ही है। अमेरिका के रक्षा विभाग 'पेंटागान एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेन्सी' द्वारा इसकी शुरुवात हुई जिसका उद्देश्य सैनिक छावनियोंके बीच सम्पर्क स्थापित करना था। इसके द्वारा प्रेषित संवादों, समाचारों में विश्वसनीयता के साथ–साथ गोपनीयता भी सुरक्षित थी। उसमें ऑकडे विभिन्न मार्गों से छोटे पैकेटों द्वारा अपने गन्तव्य तक पहुँचते थे। ये पैकेट के ऑकडे विभिन्न मार्गो से छोटे पैकेटों व्दारा अपने गन्तव्य तक पहुँचते थे । ये पैकेट के ऑकडे पैकेट स्विच्ड नेअवर्के व्दारा नाभिकीय आक्रमण से सुरक्षित थे ।

भारत और इन्टरनेट :

भारत में इन्टरनेट ने 15 वर्ष पूर्व अपने पैर जमा लिए किन्तु उस समय इसका वर्तमान स्वरूप नही था उस समय इन्टरनेट का उपयोग शिक्षा औंर अनुसंधान क्षेत्र में ई.आर.नेट व्दारा हुआ। ई.आर.नेट. भारत सरकार के इलेक्ट्रानिक विभाग और यूनाइटेड नेशन्स के डेवलपमेन्ट प्रोग्राम का संयुक्त उपक्रम था जिससे इन्टरनेट को अभूतपूर्व सफलता मिली और अनेक नोडो की स्थापना एवं परिचालन प्रारभ्भ किया गया ।

भारत में अगस्त 1995 से व्यावसायिक प्रयोग हेतु यह सुविधा विदेश संचार निगम लिमिटेड व्दारा प्रदत्त की जाने लगी जिससे दिल्ली के आसपास के क्षेत्रो के 321000 लोंग लाभन्वित हुए । अगस्त 1995 में ही नई दिल्ली, मुंम्बई, कलक्त्ता तथा चेन्नई महानगरों में इन्टरनेट सुविधा दी गई और इस सुविधा से पुणे,बंगलौर, कानपूर, लखनऊ, चण्डीगढ, जयपुर, हैद्राबाद, पटना और गोवा इससे जुड गए । मार्च 2003 तक सभी जिला मुख्यालय इन्टरनेट से जुड गये । इस प्रकार इन्टरनेट के उपभोक्ताओं की संख्या में भारत में तेजी सें वृद्धि हुई है ।

इन्टरनेट समझ के सुत्र :

इन्टरनेट को भलीभॉति समझने हेतु इससे जुडे दो मुख्य संकेतों को समझना जरूरी हैं जो बेबसाईट में लिखे होते हैं.(1 www और (2) htpwww को w3 भी कहा जाता हैं जो इंटरनेट की पूरी दुनिया को निमन्त्रित करता है इसका कार्यालय अमेरिका कें वजींनिया में स्थित है । किसी भी साईट को खोलने के लिए उसके पते की जानकरी कूटभाषा यांनी 'हाइपर टेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकाल' के माध्यम www के कार्यालय में पहुॅचाई जाती है.

बेब साईट :

इन्टरनेट रूपी समुद्र की बेब साईट एक लहर है । काम्पुटर पर किसी खास वस्तु की जानकरी हेतु उससे सम्बन्धित बेब साईट का नाम टाइप करने पर कुछ ही क्षणों में कम्पुटर मॉनीटर पर वंछित जानकारी मिल जाएगी । बेब साइट के पते में अन्तिम तीन अक्षरों की गहन भूमिका होती हैं जो साइट का प्रकार बताता हैं अर्थात वह किस विधा को अपने में समाए हैं

मॉडम :

माड्यूलेटर डिमाड्यूलेटर का संक्षिप्त नाम हैं । कम्पूटर के लाइन व्दारा भेजे जाने वाले सिग्नल डिजिटल होते हैं जबकि फोन लाइन व्दारा भेजे जाने वाले सिग्नल एनालॉग होते हैं । एनलॉग सिग्नल को डिजिटल में और डिजिटल सिग्नल को एनालॉग में बदलने का कार्य मॉडम ही करता है तकि दूसरे स्थान पर यूजर को डेटा प्राप्त हो सके ।

मॉडम डिजिटल सिग्नल की आवृत्तियों को एनालॉग में बदल देता हैं । ये मॉडम दो प्रकार के होते हैं–(1) एक्सटर्नल मॉडम (2) इन्टरनल मॉडम.

इन्टरनेट से मिलने वाली सुविधाएॅ –

इन्टरनेट कुछ विशिष्ट सेवाएॅ प्रदान करता हैं । ये विशिष्ट सेवाएॅ है.

इलेक्ट्रानिक मेल (E-Mail) यह कागज रहित सुविधा हैं । इस कागज रहित पत्र को क्षण भर में समय और धन दोनों को बचाते हुए विश्व भर में कहीं भी भेज सकते हैं । इस सुविधा कें लिए दोनों व्यक्तियों के पास एक ही बेब साइट का पता होना जरूरी नही हैं ।

वर्ल्डवाइट बेब (WWW) : ई–मेल के बाद यह इन्टरनेट पर मिलने वाली दूसरी प्रमुख सुविधा हैं । यह प्रकार का डाटा बेस है जो पूरे विश्व में फैला हैं । इसमें सर्वर की श्रृंखला हाइपर टेक्स्ट से जुडी रहती हैं ।

टेलनेट : यह प्रोटोकाल सुविधा 'रिमोट' यानी दूरस्थ 'बागइन' भी कहलाती हैं । टेलनेट एक ऐसी प्रक्रिया है जो इन्टरनेट पर कार्य कर रहें दूरवर्ती कम्पूटर पर 'लॉगइन' कर उस पर बहुत आसानी से कार्य कर सकते हैं ।

सर्च इंजन : इसे खोजक इंजक भी कहते हैं क्योंकि जो जानकारी उपभोक्ता को चाहिए वह किस बेब साइट पर प्राप्त होगी यह सर्च इंजन खोलकर उस बेब साईट की जानकारी कर सकता हैं ।

यूजनेट : यह सुविधा अत्यन्त लोकप्रिय सुविधा हैं क्योंकि इसमें समस्त सूचनाएॅ विषयवार विभाजित होकर संग्रहीत की गई हैं । जिससे एक विषय पर रूचि रखने वाले उस विषय पर सूचनाओं का आदान–प्रदान एवं विचार विमर्श कर सकते हैं ।

पुशनेट : इस सुविधा व्दारा इलेक्ट्रानिक बुलेटिन बोर्ड पर संदेश भेज दिया जाता हैं जिससे सभी लोग उसे देख सकते हैं ।

चैट रूम : इस सुविधा व्दारा स्थानीय कॉल के खर्च पर विश्व में कही भी कितनी देंर बात कर सकते हैं। चैंट का अर्थ है वार्ता यह सेवा यूँ तो लिखित सेवा हैं किन्तु आजकल Voice Chatting काफी लोकप्रिय हैं। यह हमारी आवाज को हजारो मील दूर बैठें आत्मीयों तक पहुँचाती है यदि हम अपने कम्पूटर पर केंम कॉर्डर यानी कम्पूटर केमरा लगा लें तो जिससे हम बात कर रहे हैं उसकी शक्ल भी देख सकते हैं।

ई–कॉमर्स : ई–कामर्स व्यापार में मिलने वाली सुविधा हैं । इन्टरनेट ने आज पूरे विश्व को एक बाजार के रूप तब्दील कर दिया हैं । ई– कामर्स की बेबसाइट खोलकर हम अपना आर्डर देकर मनपंसद वस्तु प्राप्त कर सकते हैं । ई–कामर्स व्दारा खरीदारी के लिए क्रेडिट कार्ड माध्यम सरल एवं सुलभ हैं ।

इन्ट्रानेट : यह सुविधा सामान्यजनोपयोगी न होकर बडी–बडी कम्पनियों व्दारा उनके मुख्यालय और उनकी अन्य शाखाओं के मध्य त्वरित सम्पर्क बनाए रखने हेतु प्रयुक्त की जाती हैं ।

ई–पे : यह सुविधा वर्तमान समय में उपभोक्ताओं की दैनन्दिन सुविधा हेतु शुरू की गई हैं । इन्टरनेट बैंकिंग हेतु रजिस्टर करके WWW online sbi-com पर लॉग आन कर सभी प्रकार के बिल (बिजली बिल, टेलीफोन बिल, मोबाईल बिल एवं बीमा पॉलिसी आदि) का ऑन लाइन भुगतान इस सेवा व्दारा सम्भव कर दिया गया हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जनसंचार एवं पत्रकारिता – प्रो. रमेश जैन
2. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ. कैलाशचंद भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली.
3. प्रयोजनमूलक हिंदी स्वरूप एवं व्याप्ती – सौ. शैलजा पाटील, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर.
4. प्रयोजनमूलक हिंदी विविध परिदृष्य – डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, 'अलका', प्रकाशन कानपूर.
5. प्रयोजनमूलक हिंदी – लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, आशिश प्रकाशन, कानपूर.
6. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – विजयकुमार मल्होत्रा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली.
7. प्रयोजनमूलक हिंदी (विविध संदर्भ) – संपादक, कौशल पाण्डेय, बलजिंदर कौर रंधवा.
8. नए जन संचार माध्यम और हिंदी – संपादक सुधीश पचौरी, अचला शर्मा.